26-10-97

लॉ और लव का बैलेन्स रखने वाली दादी

(दादी जी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य में)

आज विशेष प्यारी दादी जी की यादप्यार लेकर अमृत-महोत्सव का समाचार सुनाने वतन में गई। तो क्या देखा, हमारे जाने के पहले ही बापदादा गद्दी पर बैठे हैं और दादी जी के गले में बाहों का हार डालते हुए बहुत मीठा मिलन मना रहे हैं। जैसे साकार में बाबा गद्दी पर बैठते थे, हूबहू ऐसे दृश्य था, मैं जब सामने गई तो बापदादा बहुत मीठी दृष्टि देते हुए बोले – बच्ची, तुम्हारे पहले ही दादी को बुला लिया है। मैं तो यह दृश्य देखते ही खो गई। फिर बाबा बोले बच्ची, सब बच्चे दादी के आगे दिल से अपने स्नेह को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। बच्ची तो अमृतधारा बरसाने वाली अलौकिक जीवन में अमरभव की वरदानी है। बापदादा भी बच्ची को दिल से बार-बार याद करता, शक्ति देता और पदमगुणा प्यार देता क्योंकि साकार में बापदादा का निमित्त स्वरूप बन इतने वर्ष सर्व ब्राह्मणों को और विश्व सेवा को सम्भालने में योग्य बनी है। इसलिए बापदादा मुरब्बी बच्चों को देख खुश होते हैं और बापदादा भी बधाई देते हैं। ऐसे कहते बाबा के पास एक बाक्स रखा था, वह खोला तो उसमें बहुत चमकीले रंग-बिरंगी हीरों की मालायें थी जो बहुत सुन्दर लग रही थी। बाबा ने अपने हाथों से दादी को एक-एक करके मालायें पहनाई लेकिन हर एक माला में अलग-अलग बहुत सुन्दर शब्द हीरों से लिखे हुए थे। पहली माला में था –

6⃣3⃣9⃣ विश्व कल्याण की सेवा करने कराने में सफल मूर्त

6⃣3⃣9⃣ ब्राह्मणों की स्नेहयुक्त पालना से सर्व को आगे बढ़ाने वाली।

6⃣3⃣9⃣ सदा उमंग-उत्साह में रहने और सर्व को उमंग में लाने की सेवाधारी

6⃣3⃣9⃣ सदा गुण सम्पन्न स्वभाव, मिलनसार, निर्माण संस्कारों द्वारा सेवा।

6⃣3⃣9⃣ सर्व हमसरीक साथियों को साथी बनाए स्नेह और सम्मान देने की

सेवा।

6)39 लगातार मुरली और मुरलीधर बाप का महत्व रखना और दूसरों को भी महत्व रखाने की सेवा।

ऐसे ६ मालायें बापदादा ने पहनाई। दादी जी का हृदय ऐसे चमक रहा था, मालाओं से जो देखने वाला दृश्य ही था। और दादी जी बापदादा में समा गई।

कुछ समय के बाद बाबा बोले – बच्ची, और क्या समाचार सुनाती हो? मैने कहा बाबा मीटिंग चल रही है। बाबा बोले – सभी बच्चों को यादप्यार और मुबारक देना। बहुत विधिपूर्वक लॉ और लव का बैलेन्स रख सोचा है। अब हर एक की यही जिम्मेवारी है – ला मेकर बन औरों को भी साथी बनावें। उमंग-उत्साह अच्छा है और सबने समय भी दिया है। इसलिए हर एक बच्चे को बापदादा बांहों में समाते हुए अनगिनत यादप्यार दे रहे हैं।

उसके बाद बाबा ने मधुबन निवासी, ज्ञान सरोवर निवासी, शान्तिवन, हॉस्पिटल निवासी, आबू निवासी तथा चारों ओर के बच्चों को याद किया और सभी ने जो सेवायें की हैं उसकी मुबारक दी और कहा सबने अपनी-अपनी मुहब्बत की निशानी मेहनत की है और आगे भी करनी है। उसकी भी इनएडवान्स अनगिनत मुबारक हो, मुबारक हो। ऐसे कहते हमें विदाई दी और हम साकार दुनिया में पहुँच गई।

ओमशान्ति।